ऋषि उत्पलदेव कृत शिवस्तोत्रावली से कुछ श्लोक

श्लोक ६

अनन्तानन्दसिन्धोस्ते नाथ तत्त्वं विदन्ति ते।
तादृशा एव ये सान्द्रभक्त्याऽऽनन्दरसाप्लुताः॥

हे नाथ, वे जो उत्कट भक्ति के
आनन्द में निमग्न हैं,
केवल वे ही आपके अनन्त आनन्द-सागर
के सार को जानते हैं।

श्लोक ७

त्वमेवात्मेश सर्वस्य सर्वश्चात्मनि रागवान्।
इति स्वभावसिद्धां त्वद्भक्तिं जानञ्जयेज्जनः॥

हे नाथ, एकमेव आप सर्वात्मा हैं।
और स्वाभाविक रूप से, सभी अपनी आत्मा से प्रेम करते हैं।
अतः, वही विजयी होता है जो यह जानता है कि
भक्ति सभी में स्वाभाविक रूप से निहित है।

श्लोक ८

नाथ वेद्यक्षये केन न दृश्योऽस्येककः स्थितः।
वेद्यवेदकसंक्षोभेप्यसि भक्तैः सुदर्शनः॥

हे नाथ, गहन ध्यानावस्था द्वारा
जब बाह्य जगत का लय हो गया हो,
तब केवल आप होते हैं—
और तब आपको कौन नहीं देखता?
किन्तु, ज्ञाता व ज्ञेय के बीच की भेदयुक्त अवस्था में भी
भक्तजन को आपके दर्शन सहज ही हो जाते हैं।

श्लोक ९

अनन्तानन्दसरसी देवी प्रियतमा यथा।
अवियुक्तास्ति ते तद्वदेका त्वद्भक्तिरस्तु मे॥

जिस प्रकार अनन्त आनन्द की सरसी [आनन्द-सरोवर],
आपकी प्रियतमा, देवी आपसे अभिन्न हैं,
उसी प्रकार एकमात्र आपकी भक्ति से
मेरा वियोग कभी न हो।

डिज़ाइन © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

शिवस्तोत्रावली, १.६–९; अंग्रेज़ी भाषान्तर कॉन्स्टन्टिना रोड्ज़ बेली, *Shaiva Devotional Songs of Kashmir: A Translation and Study of Utpaladeva's Shivastotravali* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY, १९८७], पृ. ३०।

ऋषि उत्पलदेव, दसवीं शताब्दी में हुए काश्मीर शैवदर्शन के एक सम्मानित दार्शनिक व तत्त्वदर्शी थे; इनके हृदय में भगवान शिव के प्रति अगाध प्रेम था। अपनी 'शिवस्तोत्रावली' में इन महान ऋषि ने संस्कृत में रचित स्तोत्र-शृंखला में अपने भक्तिमय प्रेम को अभिव्यक्त किया है; भक्ति-विषयक ये स्तोत्र आज भी कश्मीर में गाए जाते हैं।

प्रथम स्तोत्र, 'भक्तिविलासस्तोत्रम्' [भक्ति का आनन्द] के इन श्लोकों में ऋषि उत्पलदेव हमें बताते हैं कि अपनी आत्मा के प्रति हमें जिस प्रेम की अनुभूति होती है, वही भगवान शिव का स्वरूप है, क्योंकि एकमात्र भगवान ही सबकी आत्मा हैं। जब हम भगवान के सर्वव्यापक व अहैतुक प्रेम को अपने अन्तर में गहनता से पहचान लेते हैं, तब हमें यह अनुभूति होती है कि सृष्टि में सब कुछ प्रेममय भक्ति के अनन्त आनन्द से सिक्त है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।